IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मानवीय मूल्यों का दस्तान 'गोदान'': एक पुनर्पाठ

DR. K.JAYALAKSHMI

Associate Professor, Department of Languages,
VIT, Vellore, Tamilnadu 632014

सारांश : मुंशी प्रेमचंद समग्र भारतीय साहित्य का प्रतिनिधित्व करनेवाले लेखक हैं, जिन्होंने अपने साहित्य द्वारा न केवल हिंदी कथा साहित्य को बल्कि सम्पूर्ण भारतीय साहित्य को महिमामंडित किया है | जहाँ यह माना जाता है कि साहित्य का सृजन मनोरंजन केलिए होता है वहीं प्रेमचंद अपने साहित्य में यथार्थ का चित्रण करते हैं | वे यथार्थ के ठोस भावभूमि पर खड़े होकर जीवन के सत्य को प्रस्तुत करते हैं जो समाज में व्याप्त हैं | उनके साहित्य भारतीय जन –जीवन की गाथा सुनाती है | 'गोदान' एक भारतीय किसान की ऐसी करुण दस्तान है जो युगों बाद भी प्रासंगिक है| यह उपन्यास एक युगांतकारी औपन्यासिक कृति है | साहित्य और समाज का प्रतिबिम्ब अपनी पूर्णता में इसी उपन्यास में हुआ है | जीवन के हर पहलू को इस उपन्यास में चित्रित किया गया है |

मूल शब्द: प्रेमचंद , गोदान, किसान, मानव मूल्य

भूमिका: अपने निबंध 'मनुष्य ही साहित्य का लक्ष्य है' में आ.हज़ारीप्रसाद द्विवेदी का कहना है "जो साहित्य अपने आप केलिए लिखा जाता है उसकी क्या कीमत है, मैं नहीं कह सकता, परन्तु जो साहित्य मनुष्य समाज को रोग – शोक, दारिद्र्य – अज्ञान तथा परमुखापेक्षित से बचाकर उसमें आत्मबल का संचार करता है वह निश्चय ही अक्षय निधि है|" इस कथन की सार्थकता हमें प्रेमचंद की लेखनी में व्यक्त हो जाता है | अपने चारों ओर होने वाले घटनाओं को सूक्ष्म रूप से निरिक्षण कर, सामाजिक चेतना को उसकी पूर्णत में पुनः सृजन करने का स्तुत्य प्रयास इन्होंने किया |

अपने कथासाहित्य में भारतीय समाज और संस्कृति को उसके पूर्णत के साथ प्रस्तुत करना ही इनका लक्ष्य था | प्रसिद्ध साहित्यकार शैलेश मटियानी ने अपनी एक पुस्तक की भूमिका में लिखा है कि "लिखना कागज़ पर खेती करना है | इसकी व्याख्या इस प्रकार कर सकते हैं कि मनुष्य का संबंध कहीं न कहीं भूमि से जुड़ी है | इस भूमि के अन्नादात्ता किसान है | प्रेमचंद इन्हीं किसानों को अपने उपन्यास के पात्र बनाकर हमारे समक्ष उनकी समस्याओं को पेश करते हैं | प्रेमचंद के समय की समस्यायें हर युग में प्रासंगिक रहा है | इसलिए 'गोदान' आज भी भारतीय साहित्य का महाकाव्य माना जाता है |

प्रेमचंद मनुष्य के मन की गहराई में पैठकर उनकी भावनाओं का परिचय देते हैं | इन्होंने अपने साहित्य को मानव जीवन से जोड़ा है | उनके मतानुसार उपन्यास मानव चरित्र का चित्र है | मानव – चरित्र पर प्रकाश डालना ही इनका मूल उद्देश्य है | प्रेमचंद मानव चरित्रों का सूक्ष्म उद्घाटन द्वारा, मानवीय संवेदना को कलात्मक अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं |

प्रस्तावना : प्रेमचंद साहित्य को परिभाषित करते हुए कहते हैं "साहित्य की सर्वोत्तम परिभाषा जीवन की आलोचना है |" गोदान इसका एक उत्तम उदाहरण है | 'गोदान' भारतीय किसान की गाथा है जो वर्षों से चले आ रहे ज़मींदारों, पूंजीवादियों,साहूकारों द्वारा गरीबों की शोषण का पर्दाफाश करता है | इस उपन्यास में करीब पच्चीस पात्र हैं जो अपनी भूमिका बखूबी निभाते हैं | उपन्यास की पृष्ठभूमि ग्राम और शहर दोनों में व्याप्त होकर चलती है | होरी, धनिया और उनके बच्चों पर मुख्य कथा चलती हैं तो मेहता – मालती, राय –साबह, गोविन्दी, खन्ना आदि के प्रसंग प्रासंगिक कथाएँ हैं | प्रेमचंद ने होरी, धनिया, गोबर, रमानाथ को एक प्रतीक के रूप में प्रस्तुत कर समाज में मनुष्य का सही दस्तावेज़ प्रस्तुत किया है | प्रेमचंद अपने देश के किसानों की दयनीय ज़िन्दगी का सीधा साक्षात्कार करते हैं और 'गोदान' भारतीय किसानों का मर्मस्पर्शी, करुण और त्रासद दस्तावेज़ बन जाता है | इसमें होरी समाज के उस निम्न वर्ग का प्रतीक है जो आशाओं को सिंचता है और अपने सपनों को यथार्थ में बदलते हुए उसमें जीना चाहता है |

प्रसिद्ध हिंदी अलोचक डॉ. गंगाप्रसाद विमल ने इस उपन्यास को महाकाव्यात्मक का दर्जा प्रदान किया है | उनके ही शब्दों में "गोदान सच्चे अर्थ में भारतीय ग्राम इकाई का और नगर इकाई का महाकाव्य है | यह मानवीय संघर्ष की कथा है|"

होरी भारतीय कृषक है जो गो पालन की अभिलाषा लिए हुए चलता है | यही आज के मनुष्य में गो नहीं बल्कि ऐशो – आराम के विलास और भोग के वस्तु है | एक गो को अपने द्वार पर देखने की इच्छा में होरी के नैसर्गिक गुणों का स्वरुप मिलता है | भारतीय संस्कृति में गाय पालने की इच्छा कितना प्रबल है वह होरी के शब्दों में व्यक्त होता है "गऊ ही तो द्वार की शोभा है, सवेरे – सवेरे गऊ के दर्शन हो जाए तो क्या कहना | न जाने कब यह साध पूरी होगी, कब वह शुभ दिन आएगा |" मानव मन की लालसा, स्वप्न और चिरकाल से संचित अभिलाषा को प्रस्तुत करने से यह साबित हो जाता है कि मनुष्य का यथार्थ साहित्य से निरंतर जुड़ा है | वर्तमान समय में भी हमारे चारों ओर हम एक होरी को देखते हैं जो होरी की तरह असुविधाओं के अभाव में जीवन जीता है और अपने सपनों को साकार नहीं कर पाता |

होरी की स्थिति का कारण तो शोषक वर्ग है जो उस समय जमींदार और सामंतवाद है तो आज राजनीतिज्ञ और सरकार हैं | होरी मरते दम तक शोषण का शिकार बनता जाता है | इस अमानुषिक शोषण का शिकार मात्र होरी नहीं बल्कि उसका पूरा परिवार झेलता है | जब होरी के गाय की मृत्यु विषपान से हो जाता है तो पुलिस की कुचाल में होरी फसता है और उसे रिश्वत देनी पड़ती है | इसकेलिए उसे महाजन से पैसा सूद पर लेना पड़ता है जिसका कई गुना वसूल उसे देना पड़ता है | झींगूर सिंह, दातादीन, नोखेराम जैसे पात्र किसानों का शोषण करते हैं | तत्कालीन शोषण का सजीव चित्र ही यहाँ चित्रित है | आज भी हमारे समाज में यह शोषण होता है | अमीर को कोई कुछ नहीं बिगड़ता पर ग़रीब ही हमेशा इसका शिकार होता है |

रायसाहब, अमरपाल सिंह , मिल मालिक खन्ना, दलाल आदि यहाँ व्यवस्था की कडियों के निर्माता हैं | ये लोग अपने धन अमीरी के बल पर इस व्यवस्था को अपने ओर कर सकते हैं | बहुत साल पहले जो राजनीतिक हल –चल हमें देखने को मिला आज समय के साथ

थोड़ा परिवर्तन तो ज़रूर हुआ है | सत्ताधारीयों के हाथ आज की व्यवस्था बिकाऊ ही नहीं बल्कि आज इन्हीं सत्ताधारीयों के हाथ के कठपुत्तली है व्यवस्था | बदला है तो सिर्फ समय और परिस्थिति |

धनिया एक ऐसी पात्र है जिसके माध्यम से प्रेमचंद ने एक सशक्त नारी पात्र को पाठकों के समक्ष पेश किया है | धनिया अनपढ़ है और गॉव में रहने वाली है | धनिया होरी की पत्नी है जो होरी की पत्नी होने के कारण आर्थिक शोषण की शिकार है पर बौद्धिक और धार्मिक आभिजात्य नीतियों पर विध्वंस प्रहार करती है | जब उसका बेटा गोबर झुनिया को घर लाता है तो वह सारी बिरादरी को ठोकर मार कर अपनी घर की लाज को बनाई रखती है | उसी प्रकार वह निम्न जाति की सिलिया को अपने घर में आश्रय देती है | धनिया प्रेमचंद की निजी उपलब्धि है और यह प्रेमचंद की उपलब्धि है जिन्होंने अपने व्यक्ति और वर्ग की सीमा का ही नहीं अपनी समय सीमा का भी अतिक्रमण किया था | धनिया में नए युग का प्रखर बुद्धिवाद है | सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक चेतना से युक्त आज की नारी की प्रखरता उस समय की अनपढ़ महिला धनिया में दिखाई देती हैं |"[i] अंत में जब होरी की मृत्यु होती है तो धनिया जीवित है और अपने खून – पसीने की कमाई को दातादीन के हाथ देती है | यहाँ पूंजीवाद के विकराल दोनों में निस्पंद होती जाती है जो भारतीय मनुष्यता का गोदान करवा रही है | प्रेमचंद की आस्था धनिया में जीवित है और मानवीय संघर्ष और जिजीविषा धनिया में अमर है |

आज की युवा पीढी में अकसर देखा जाता है कि वह अपने पढाई के बाद विदेशों में जाकर बसना चाहता है | पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित हो वहां के जीवन शैली से आकर्षित हो सबकी झुकाव उस तरफ है | अगर देखा जाए तो 'गोदान' का गोबर इसी नयी पीढ़ी का प्रतीक है जो यह समझता है कि धनी व्यक्ति ही समाज में प्रतिष्ठा एवं यश प्राप्त करता है | अतः वह नगारीय जीवन से आकर्षित होकर नौकरी केलिए शहर के तरफ जाता है | पैसा कमाने के बाद वह उस व्यवस्था का भी विरोध करता है जिसमें उसका पूरा परिवार दबा हुआ है | प्रेमचंद ने झुनिया और गोबर के माध्यम से विधवा विवाह का समर्थन किया है जो मानवीय संवेदना का सशक्त उदाहरण है | मानवीय रिश्तों के बनते –बिगड़ते चित्र इनके संबंध में दिखाई देता है | हम यह भी मान सकते हैं कि गोबर के माध्यम से ही पहले बार साहित्य में लघु परिवार (nuclear family) का उदय हुआ | साथ ही विवाह जैसे पवित्र बंधन में जो लोप होता जा रहा है इसका भी उदहारण मेहता और मालती के प्रेम में अभिव्यक्त है | प्रेमचंद ने आज के युग में व्याप्त लिव – इन – रिलेशनशिप का उदहारण इनके माध्यम से चित्रित किया है | इस नयी सभ्यता का ज़हर कैसे गाँवों की ओर व्याप्त हो रहा है यह यहाँ दर्शाया गया है |

सोना और रूपा होरी और धनिया की बेटियाँ हैं जिनके माध्यम से देहज –प्रथा का विरोध, मातादीन – सिलाया के माध्यम से दलित- चेतना को मुखरित करना एवं अंतरजातीय विवाह का समर्थन प्रेमचंद ने किया | ये सारे विषय वर्तमान युग में भी बहुचर्चित हैं जिसका शंखनाद प्रेमचंद ने अपने युग में ही किया है | गोबर के माध्यम से बेरोज़गारी की समस्या को उठाया गया है | इस 21 वीं शताब्दी में भी इसका कोई हल नहीं हुआ है | आज भी हम देखते हैं की कैसे मजदूर अंतर राज्यों में जाकर नौकरी करता है | तब भी शोषण होता था और आज भी शोषण हो रहा है | गोबर जैसे युवा प्रतिनिधि हर काल से समाज में विद्यमान हैं जो अपने ऊपर होने वाले अत्याचारों के खिलाफ़ आवाज़ उठाते हैं | धर्म की समस्या और अशिक्षा की समस्या हम होरी जैसे पात्र में देख सकते हैं जो रुढ़ियों एवं परम्पराओं का अँधा भक्त है | अपनी इसी अशिक्षा के कारण वह वास्तविकता को समझता नहीं | वर्तमान समय में भी अगर देखा जाये तो कई जगहों पर यह समस्या नज़र आते हैं जहाँ अशिक्षित वर्ग इस प्रकार के जाल में फस जाते हैं |

इन सभी समस्याओं को प्रस्तुत कर प्रेमचंद समाज में लुप्त होते हुए मानवीय संवेदना को जिसप्रकार हमारे सामने रखते हैं वह आज भी हमारे चारों ओर दिखाई देता है | दो पीढ़ियों की परस्पर विरोधी विचारधारा, उनकी परस्पर विरोधी आस्थाओं के बारे में कोई उस ज़माने में सोच भी नहीं सकता था, क्योंकि उस ज़माने में बाप – बेटे का , माँ –बेटी का, पति – पत्नी का, सास- बहु का रिश्ता बहुत ही गहरा था | कहने का अभिप्राय यह नहीं कि आज ये रिश्ते पूर्ण रूप से नष्ट हो गए हैं लेकिन आज बदलते परिस्थिति, जीवन शैली इन रिश्तों के बीच दरार पैदा करते हुए दिखाई पड़ते हैं |

ये सारी समस्यायें आज भी समाज में विद्यामान है जो उस समय से मेल खाती है | यह मानवीय संघर्ष की गाथा वर्तमान में भी मानवीय मूल्यों को रोपने का महत्त्वपूर्ण कार्य कर रही है | गरीबी से जूझता हुआ किसान वर्ग , ऋण से त्रस्त किसान, शोषण का शिकार किसान, विधवा विवाह, दहेज़ प्रथा, अनमेल विवाह, दलित चेतना इस उपन्यास के प्रमुख मुद्दे रहे हैं जो आज के वर्तमान जीवन में भी प्रासंगिक है | जिन बातों को 80 साल पहले प्रेमचंद ने अपने साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत किया है वह आज भी हमारे समाज में दृष्टिगोचर है |

निष्कर्ष : हम कह सकते हैं कि प्रेमचंद अतीत के खंडहरों में नहीं भटके, उन्होंने वर्तमान में ही सूक्ष्मतः झांककर शाश्वत मानव मूल्यों को उद्घाटित करने एवं उन्हें व्यवहार जगत में परिणित की | उन्होंने अपने युग के मानव चरित्र की अच्छाईयों एवं बुराईयों का समग्र उद्घाटन किया | उन्होंने शाश्वत मानव – मूल्यों को परखने, अंकित और रक्षित करने का सतत् प्रयास किया जो आज भी सुलभ है | इसलिए गोदान के सन्दर्भ में हम इस उक्ति को सही ठहरा सकते हैं की “हितेन सह सहितं” याने साहित्य वही है जिससे मानव – हित का संपादन हो |

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

[i] प्रेमचंद की नारी दृष्टि, डॉ शाशिमुदिराज,अनुशीलन, 1983 पृ. 46
2. हंसराज रहबर, प्रेमचंद जीवन कला और कृतित्त्व, आत्माराम एंड संस, दिल्ली 1962.
3. डॉ शेख अब्दुल वहाब, प्रेमचंद मनन और मंथन, स्वाक्षर प्रकाशन, नए दिल्ली, 2018.